



## Free Training on Stock Market

Read our Free Book on "Art of Stock Investing". YouTube Channel name - bse2nse

freestocktraining.in

OPEN

HOME संस्कृत शिक्षण पाठशाला » DOWNLOADS » लघुसिद्धान्तकौमुदी » साहित्यम् » दर्शनम् » स्तोत्रम्/गीतम् » कर्मकाण्डम् » विविध »

Home » कर्मकाण्ड » देव पूजा विधि Part-3 पुण्याहवाचनम्

### देव पूजा विधि Part-3 पुण्याहवाचनम्

जगदानन्द झा 1:44 am 4 टिप्पणियां

पुण्याहवाचन के दिन आरम्भ में वरुण-कलश के पास जल से भरा एक कलश भी रख दे। वरुण-कलश के पूजन के साथ-साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिए। पुण्याहवाचन का कर्म इसी से किया जाता है। सबसे पहले वरुण की प्रार्थना करें।

वरुण प्रार्थना -ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक।

पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

यजमान अपनी दाहिनी ओर पुण्याहवाचन-कर्म के लिए वरुण किये हुए युग्म ब्राह्मणों को, जिनका मुख उत्तर की ओर हो, बैठा ले। इसके बाद यजमान घुटने टेककर कमल की कोढ़ी की तरह अञ्जलि बनाकर सिर से लगाकर तीन बार प्रणाम करे। तब आचार्य अपने दाहिने हाथ से स्वर्णयुक्त उस जलपात्र (लोटे) को यजमान की अञ्जलि में रख दे। यजमान उसे सिर से लगाकर निम्नलिखित मन्त्रा पढ़कर ब्राह्मणों से अपनी दीर्घ आयु का आशीर्वाद मांगे-

यजमान-ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।

त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः अतो धर्माणि धारयन्।

तेनायुष्यप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु, इति भवन्तो ब्रुवन्तु विप्र-ॐ पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु कुल तीन बार इसी आनुपूर्वी से यजमान ब्राह्मण संवाद कर यजमान सिर पर रखे कलश को कलश के स्थान पर रखे पुनः इसी कलश को सिर से लगाकर पूर्वोक्त आनुपूर्वी मंत्र ॐ दीर्घा नागा आदि तीन बार करें। विप्र-इति अस्तु। पुनः कर्ता पूर्वाभिमुख बैठे युग्म ब्राह्मणों के सुप्रोक्षितमस्तु कहकर जल दे। ब्राह्मण-अस्तु सुप्रोक्षितम्। यजमान-ॐ शिवा आपः सन्तु, ऐसा कहकर आम्र पल्लव आदि के द्वारा ब्राह्मण के दाहिने हाथ में जल दे। विप्र-ॐ सन्तु शिवा आपः, ऐसा कहकर ग्रहण कर ले। इसी प्रकार आगे यजमान ब्राह्मण के हाथ में पुष्पादि देता जाय और ब्राह्मण इन्हें स्वीकार करते हुए यजमान की मङ्गलकामना करें। यजमान-ॐ सौमनस्यमस्तु पुष्पं दद्यात्। विप्र- अस्तु सौमनस्यम्। यजमान-अक्षतं चारिष्टं चास्तु। विप्र- अस्त्वक्षतमरिष्टं च। यजमान-ॐ गन्थाः पान्तु। विप्र-सौमंगल्यं चास्तु। यजमान-ॐ अक्षताः पान्तु। विप्र- आयुष्यमस्तु। यजमान-ॐ पुष्पाणि पान्तु। विप्र-सौश्रियमस्तु। यजमान-ॐ सफलानि ताम्बूलानि पान्तु विप्र-

Search

Popular

Tags

Blog Archives

लोकप्रिय पोस्ट



#### देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार, व्रतोद्यापन, हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...



#### संस्कृत कैसे सीखें

इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...



#### तर्पण विधि

प्रातःकाल पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बायें ओर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...



#### लघुसिद्धान्तकौमुदी (अक्सन्धि-प्रकरणम्)

अथ  
अक्सन्धि: If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

ऐश्वर्यमस्तु। यजमान-दक्षिणापान्तु। विप्र-बहुधनञ्चास्तु। यजमान-ॐ स्वर्चितमस्तु। विप्र-अस्तु स्वर्चितम्। इसके बाद यजमान आचार्य एवं ब्राह्मणों को पुनः प्रणाम कर प्रार्थना कर-श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रां चायुष्यं चास्तु। विप्र-श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रां चायुष्यं चास्तु। ऐसा कहकर ब्राह्मण उसी कलश के जल से यजमान के सिर पर छिड़कते हुए बोलें। 'दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु'। यजमान अक्षत लेकर-यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ऐसा कहे। विप्र-वाच्यताम्। पुनः यजमान अञ्जलि में अक्षत लेकर बोले-व्रत-जपनियम-तप-स्वाध्याय- क्रतु-दया-दम दान-विशिष्टानां सर्वेषां भवतां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। विप्र- समाहितमनसः स्मः। यजमान- प्रसीदन्तु भवन्तः। विप्र-प्रसन्नाः।

स्म। इसके बाद कलश के ऊपर अक्षत डालते हुए यजमान हर बार प्रणाम करे या पहले से रखे गये दो पात्रों में से पहले पात्र में आम के पल्लव या दूब से थोड़ा-थोड़ा जल गिराये। ब्राह्मण बोलें-ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रासमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रासमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। इसके बाद दूसरे पात्र में ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं यद्रोगमशुभमकमल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु। पुनः पहले पात्र में-ॐ यच्छेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरिभृद्धिरस्तु। शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहर्ते सनक्षत्रो सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापंचाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयेताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयेताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयेताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयेताम्। ॐ भगवन्तौ

विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। दूसरे पात्र में-

ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः।

ॐ शत्रावः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोरणि। ॐ शाम्यन्त पापानि।

ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः। पुनः प्रथम पात्र में-ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु।

ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा

ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु।

ॐ शिवा आहूतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अरोहात्रो शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। शूक्रांगारक-बुध-बृहस्पति- शनैश्चर-राहु-केतु-सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

ॐ भगवान् नारायणः प्रीयेताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयेताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयेताम्। ॐ पुरोऽवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। इसके बाद यजमान कलश को भूमि पर रखकर पहले पात्र में गिराये गये जल से मार्जन करें, परिवार के लोगों का एवं घर का भी अभिसिंचन करें। द्वितीय पात्र के जल को एकान्त स्थान में गिरा दे।

यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-ॐ पुण्याहकालान् वाचयिष्ये। विप्र-ॐ वाच्यताम्। पुनः यजमान ब्राह्मणों को हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यच्चय सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ॐ पुण्याहम् इस प्रकार यजमान ब्राह्मण इस विधि की कुल तीन आवृत्ति करें। ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि माम्। यजमान-ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्। ऋषिभिः सिद्ध-गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ॐ कल्याणम्३ ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजान्याभ्यां॥ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समयं मे कामः समृद्धातामुपमादो नमतु॥ यजमान-सागरस्य यथा



**FIITJEE**  
will teach you  
**Online** until  
situation gets  
normalised

**Register for our HOME BASED ONLINE ADMISSION TEST**

**18<sup>th</sup>, 19<sup>th</sup>, 25<sup>th</sup> & 26<sup>th</sup>  
and 2<sup>nd</sup> & 3<sup>rd</sup> May 2020**

For Students of Class V to XII  
VIII, IX, X, XI, XII & XII app

**KNOW MORE**

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

 खोज

लेखानुक्रमणी

- 2020 (23)
- 2019 (57)
- 2018 (63)
- 2017 (42)
- 2016 (32)
- 2015 (37)

वृद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ॐ ऋध्यताम्, 3

ॐ सत्रास्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्याऽअध्वारुहामाविदाम देवान् स्वज्योतिः। यजमान-स्वस्तिर्याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रिया नित्यं ताञ्च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम कुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ॐ आयुष्मते स्वस्ति३, ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। यजमान-समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियञ्च ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्यामुककर्मणः "श्रीरस्तु" इति भवन्तो ब्रुवन्तु। ब्राह्मण-ॐ अस्तु श्रीः 3 ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रो पाश्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्पान्निषाणामुम् इषाण सर्वलोकम् इषाण। इसके बाद यजमान हाथ में अक्षत जल लेकर-ॐ कृतैतदस्मिन् दानखण्डोक्तपुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु ऐसा कहकर जल छोड़ दे। ब्राह्मण-ॐ अस्तु परिपूर्णः।

इति पुण्याह वाचन

### अभिषेक

पुण्याहवाचनोपरान्त कलश के जल को पहले पात्र में गिरा लें। अब अविधुर (जिसकी धर्मपत्नी जीवित हो) ब्राह्मण उत्तर या पश्चिम मुख होकर दूब और पल्लव के द्वारा इस जल से यजमान का अभिषेक करे। अभिषेक के समय यजमान अपनी पत्नी के बायीं तरफ कर ले। परिवार भी वहाँ बैठ जाय। अभिषेक के मन्त्रा निम्नलिखित हैं-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशोऽभवत्सरित्॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद॥ ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि माम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्ताये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्तोणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भेषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि॥ ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नमः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना। ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। ॐ प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ऽ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ऽ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु। सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु॥

दक्षिणादान-ॐ अद्य.. कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गता-सिद्धयर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

Share: [f](#) [t](#) [G+](#) [in](#)



### जगदानन्द झा

लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता, निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुड़ा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते हैं। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक

## Free Training on Stock Market

freestocktraining.in

Learn, Get Enriched for Free

Read our Free Book on "Art of Stock Investing" YouTube Channel r - bse2nse

OPEN

- ▼ 2014 (106)
- ▶ दिसंबर (6)
- ▶ नवंबर (8)
- ▶ अक्टूबर (5)
- ▶ सितंबर (2)
- ▶ अगस्त (9)
- ▶ जुलाई (2)
- ▶ मई (4)
- ▶ अप्रैल (11)

### ▼ मार्च (40)

धर्मशास्त्र के प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा...

संस्कृत काव्यों में छन्द

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, एक समीक्षा

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (तृतीय अध्याय...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था (द्वितीय अध...

स्मृति ग्रन्थों में आचरण की व्यवस्था, स्मृति - स्व...

संस्कृत भाषा के विकास हेतु कार्ययोजना

संस्कृत भाषा और छन्दोबद्धता

संस्कृत की पुस्तकें वाया संस्कृत संस्थान

Learn Hieratic in Hindi Part -5 उपनयन संस्कार

समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट

मुख्यपृष्ठ

पुरानी पोस्ट →

#### 4 टिप्पणियां:



**Unknown** 12 मई 2019 को 9:03 pm

Very nice

जवाब दें



**Praveen pandey** life long 3 जुलाई 2019 को 12:12 am

Very nice

जवाब दें



**Unknown** 29 नवंबर 2019 को 5:04 am

यह पुस्तक हमें चाहिए, किस प्रकार से मिल सकती है, बताने की कृपा करें।

जवाब दें



**Unknown** 12 जनवरी 2020 को 7:21 pm

बहुत उत्तम है, सरल शब्दों का उपयोग किया है अति उत्तम ... धन्यवाद जी  
मौ चंडी चामुंडा का हवन विधि साधना, भी और गायत्री विधि साधना भी, और शिव शंकर जी भी पुजा विधि  
विधान दीजिएगा ..... धन्यवाद जी फिर से....  
आप का कोई आध्यात्मिक ग्रुप हो तो ऐंड करने की कृपा करें..और मुझे भी सूचित करें, ताकी मुझे मालूम  
पड़ें.....

09869079626

07021793217

मुंबई से जयेश परमार.....

जवाब दें

अपनी टिप्पणी लिखें. . .



इस रूप में टिप्पणी करें:

Vasudev Shastri (C

साइन आउट करें

डालें

पूर्वावलोकन

☐ मुझे सूचित करें

कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति

मूलगण्डान्त शान्ति योग

गृहप्रवेश विधि

शिलान्यास विधि

देव पूजा विधि Part-22 भागवत पूजन विधि

देव पूजा विधि Part-20 सत्यनारायण पूजा विधि

देव पूजा विधि Part-19 अभिषेक विधि

देव पूजा विधि Part-18 हवन विधि

देव पूजा विधि Part-17 कुश कण्डिका

देव पूजा विधि Part-16 प्राणप्रतिष्ठा विधि

देव पूजा विधि Part-15 सर्वतोभद्र पूजन

देव पूजा विधि Part-14 महाकाली, लेखनी, दीपावली  
पूजन...

देव पूजा विधि Part-13 लक्ष्मी-पूजन

देव पूजा विधि Part-12 कुमारी-पूजन

देव पूजा विधि Part-11 दुर्गा-पूजन

देव पूजा विधि Part-10 पार्थिव-शिव-पूजन

देव पूजा विधि Part-9 शिव-पूजन

देव पूजा विधि Part-8 शालग्राम-पूजन

देव पूजा विधि Part-6 नवग्रह-स्थापन एवं पूजन

देव पूजा विधि Part-5 नान्दीश्राद्ध प्रयोग

देव पूजा विधि Part-4 षोडशमातृका आदि-पूजन

देव पूजा विधि Part-3 पुण्याहवाचनम्

देव पूजा विधि Part-2 कलशस्थापन

देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

देवताओं के पूजन के नियम

► फ़रवरी (11)

► जनवरी (8)

► 2013 (13)

► 2012 (55)

► 2011 (14)

जगदानन्द झा. Blogger द्वारा संचालित.

मास्तु प्रतिलिपि:

---

इस ब्लॉग के बारे में

---

संस्कृतभाषी ब्लॉग में मुख्यतः मेरा

वैचारिक लेख, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, आयुर्वेद, विधि,  
विद्वानों की जीवनी, 15 हजार संस्कृत पुस्तकों, 4 हजार  
पाण्डुलिपियों के नाम, उ.प्र. के संस्कृत विद्यालयों,  
महाविद्यालयों आदि के नाम व पता, संस्कृत गीत

आदि विषयों पर सामग्री उपलब्ध हैं। आप लेवल में जाकर  
इच्छित विषय का चयन करें। ब्लॉग की सामग्री खोजने के लिए  
खोज सुविधा का उपयोग करें

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 2

---

Powered by

[Publish for Free](#)

संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 3

---

Powered by

[Publish for Free](#)

SANSKRITSARJANA वर्ष 2 अंक-1

---

Powered by

[Publish for Free](#)

मेरे बारे में

---



**जगदानन्द झा**  
मेरा पूरा प्रोफ़ाइल देखें

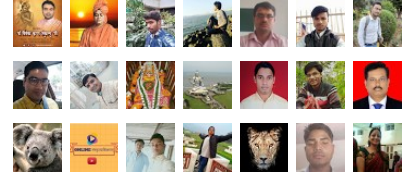
संस्कृतसर्जना वर्ष 1 अंक 1

---

Powered by

Publish for Free

## समर्थक एवं मित्र

Followers (277) [Next](#)[Follow](#)

## RECENT POSTS

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था  
कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत शिक्षण का पाठ्यक्रम  
काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 2)  
काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 1)  
काव्यप्रकाशः (नवम उल्लासः)

## अव्यवस्थित सूची

संस्कृत की प्रतियोगिताएँ  
श्रीमद्भागवत् की टीकायें  
जनगणना 2011 में संस्कृत का स्थान  
उत्तर प्रदेश के माध्यमिक संस्कृत विद्यालय

## लेखाभिज्ञानम्

अंक	अभिनवगुप्त	अलंकार	आचार्य
आधुनिक संस्कृत	आधुनिक संस्कृत गीत		
आधुनिक संस्कृत साहित्य	आम्बेडकर		
उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान	उत्तराखंड	ऋग्वेद	ऋतु
ऋषिका	कणाद	करक चतुर्थी	करण
करवा चौथ			
कर्मकाण्ड	कामशास्त्र	कारक	काल
काव्य			
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्रकार	कुमाऊँ	कूर
कूर्माचल	कृदन्त	कोजगरा	कोश
गंगा	गया		
गाय	गीतकार	गीति काव्य	गुरु
गृह कीट			
गोविन्दराज	ग्रह	चरण	छन्द
छात्रवृत्ति	जगत्		
जगदानन्द झा	जगन्नाथ	जीवनी	ज्योतिष
तकनीकी शिक्षा	तद्धित	तिङन्त	तिथि
तीर्थ			
दर्शन	धन्वन्तरि	धर्म	धर्मशास्त्र
नक्षत्र	नाटक		
नाट्यशास्त्र	नायिका	नीति	पक्ष
पतञ्जलि			
पत्रकारिता	पत्रिका	पराङ्मुखाचार्य	पाण्डुलिपि



पालि	पुरस्कार	पुराण	पुरुषार्थोपदेश	पुस्तक
पुस्तक संदर्शिका	पुस्तक सूची	पुस्तकालय	पूजा	
प्रत्यभिज्ञा शास्त्र	प्रशस्तपाद	प्रहसन	प्रौद्योगिकी	
बिल्हण	बौद्ध	बौद्ध दर्शन	ब्रह्मसूत्र	भरत
भर्तृहरि	भामह	भाषा	भाष्य	भोज प्रबन्ध
मनु	मनोरोग	महाविद्यालय	महोत्सव	मुहूर्त
योग	योग दिवस	रचनाकार	रस	राजभाषा
रामसेतु	रामानुजाचार्य	रामायण	राशि	रोजगार
रोमशा	लघुसिद्धान्तकौमुदी	लिपि	वर्गीकरण	
वल्लभ	वाल्मीकि	विद्यालय	विधि	विश्वनाथ
विश्वविद्यालय	वृष्टि	वेद	वैचारिक निबन्ध	वैशेषिक
व्याकरण	व्यास	व्रत	व्रत कथा	शंकराचार्य
शतक	शरद्	शैव दर्शन	संख्या	संचार
संस्कृत	संस्कृत आयोग	संस्कृत गीतम्		
संस्कृत पत्रकारिता	संस्कृत प्रचार	संस्कृत लेखक		
संस्कृत वाचन	संस्कृत विद्यालय	संस्कृत शिक्षा		
संस्कृतसर्जना	सन्धि	समास	सम्मान	
सामुद्रिक शास्त्र	साहित्य	साहित्यदर्पण	सुबन्त	
सुभाषित	सूक्त	सूक्ति	सूचना	सोलर सिस्टम
सोशल मीडिया	स्तुति	स्तोत्र	स्त्रीप्रत्यय	स्मृति
स्वामि रङ्गरामानुजाचार्य	हास्य	हास्य काव्य		
हुलासगंज	DEVNAGARI SCRIPT	DHARMA		
EPIC	JAGDANAND JHA			
JRF IN SANSKRIT (CODE- 25)	KAHANI			
LIBRARY	MAGAZINE	MAHABHARATA		
MANUSCRIPTOLOGY	PUSTAK SANGDARSHIKA			
SANSKRIT	SANSKRIT LANGUAGE			
SANSKRIT SAPTAHA	SANSKRITSARJANA			
SEX	STUDENT CONTEST	UGC NET/ JRF		

## PAGES

संस्कृत- शिक्षण- पाठशाला 1

संस्कृत शिक्षण पाठशाला 2

विद्वत्परिचयः 1

विद्वत्परिचयः 2

विद्वत्परिचयः 3

स्तोत्र - संग्रहः

पुस्तक विक्रय पटल

काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 2)

करोना के परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रंथों में वर्णित आचरण की व्यवस्था

काव्यप्रकाशः (दशम उल्लासः 1)

जगदानन्द झा

जगदानन्द झा

photo

## आपको क्या चाहिए?

इस ब्लॉग में संस्कृत के विविध विषयों पर आलेख उपलब्ध हैं, जो मोबाइल तथा वेब दोनों वर्जन में सुना, देखा व पढ़ा जा सकता है। मोबाइल के माध्यम से ब्लॉग पढ़ने वाले व्यक्ति, search, ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें, लेखाभिज्ञानम् तथा



काव्यप्रकाशः (नवम उल्लासः)

मध्यकालीन संस्कृत साहित्य

काव्यप्रकाशः (अष्टमोल्लासः)

**लेखानुक्रमणी** के द्वारा इच्छित सामग्री खोज सकते हैं।कम्प्यूटर आदि पर मीनू बटन दृश्य हैं। यहाँ पाठ लेखन तथा विषय प्रतिपादन के लिए 20,000 से अधिक पृष्ठों, कुछेक ध्वनियों, रेखाचित्रों, चित्रों तथा चलचित्रों को संयोजित किया गया है। विषय सम्बद्धता व आपकी सहायता के लिए लेख के मध्य तथा अन्त में सम्बन्धित विषयों का लिंक दिया गया है। वहाँ क्लिक कर अपने ज्ञान को आप पुष्ट करते रहें।

इन्टरनेट पर अधकचरे ज्ञान सामग्री की भरमार होती है। कई बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है।

इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।

Copyright © 2020 Sanskritbhashi संस्कृतभाषी | Powered by Blogger

Design by FlexiThemes | Blogger Theme by NewBloggerThemes.com